Research Type (Original Article/Case Study/Review Article)

PAPER TITLE- Hindi and English Both (In Hindi 16pt Nirmala UI/In English 15pt Cambria, all caps, Bold, Left)

Sub Title - If any

Author(s) (correspondence)* (In Hindi, English both 13pt Cambria, Left)

Details: (11pt Times New Roman/Cambria, Left)
First Name:
Middle Name (If any):
Last Name:
Affiliation: Designation, Department, College/University, city, (state), Country
Email Id:
ORCID Id: If available, the 16-digit ORCID of the author(s) (https://orcid.org/)

Abstract: Hindi and English Both
(In Hindi 11pt Nirmala UI, justify)

Hindi : अथर्ववेद में रूद्र के सात नामों का भी उल्लेख किया गया है, जो उत्तरकालीन शैव सम्प्रदायों में शिव के प्रधान नामों के रूप में आते हैं। ये सात नाम हैं - भव, शर्व, पशुपति, उग्र, रूद्र, महादेव, ईशान। यद्यिपि यह सम्य है कि इन सभी नामधारी देवताओं को विभिन्न देवताओं के रूप में चित्रित कियाग गया है। भव और शर्व को पशुओं और मानवों पर शासन करने वाला देवता बताया गया है। उनके बाणों से देवता अथवा कोई भी मनुष्य नहीं बच सकता है। उन्हें यातु धानु (राक्षस) तथा अन्य बुरी आत्माओं को मारने के लिए आमन्त्रित किया गया है। शर्व को बाण चलाने वाला कहा गया है और भव को राजा कहा गया है।

(In English 11pt cambria, justify)

English: Seven names of Rudra are also mentioned in the Atharvaveda, which appear to be the principal names of Shiva in the later Shaiva sects. These seven names are - bhava, sharava, pashupati, avid, rudra, mahadev, ishaan. Although it is common that all these Namdhari deities are depicted as different deities. Bhava and Shiva are said to be the deity ruling over animals and humans. No human or deity can escape from their arrows. He is invited to kill Yatu Dhanu (demon) and other evil spirits.

Keywords: (In Hindi 11pt Nirmala UI, justify)
Write here up to Three (3) keywords relevant to the research presented in the manuscript.

प्रस्तावना (12pt Krutidev 10, Nirmala UI, Mangal, Bold, Justify)

(Should not exceed 5 pages)

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अथर्ववेद में रूद्र के भयावह रूप को पूर्ववत रखा गया और उससे मुक्ति पाने के लिए अनेक प्रार्थनायें और अर्चनाये की गई हैं, किन्तु इसके साथ-साथ उसके सदाशिव रूप का विकास भी प्रारम्भ हो गया था। पाशुपत सम्प्रदाय में शिव की जो अष्टमूर्ति की कल्पना है, उसमें से सात नाम तो अथर्ववेद में देखने को मिलते हैं - भव, शर्व, पशुपति, उग्र, रूद्र, महादेव और ईशान। इस प्रकार

पाशुपतों ने देव की जो कल्पना की थी, वह इस सृष्टि का कारण है, सर्वव्यापक है, उसका भव बीजरूप में अथर्ववेद में देखने को मिलता है। पाशुपतों की अनेक परम्पराओं का प्रारम्भ बी रूप में अथर्ववेद में हो जाता है।

निष्कर्ष (12pt Krutidev 10, Nirmala UI, Mangal, Bold, Justify)

यह बात और स्पष्ट हो जाती है कि जबकि हम उसे दूसरे चित्र में इस पुरुष देवता को एक धनुर्धारी षिकारी के रूप में देखते है। उराका यह रूप वैदिक साहित्य, भहाभारत और पुराण में बहुधा देखने को मिलता है। किरातार्जुनीय में तो षिव इसी रूप में दिखाए गए हैं। उत्तर-पष्चिम भारत में निवास करने वाली अनेक आदिम जातियों जैसे षिव आदि भी षिव को षिकारी रूप में ही देखते थे। पाषुपत-सम्प्रदाय में भी षिव के षिकारी स्वरूप का स्मरण बार-बार किया गया है। यहाँ से अन्य मोहरें भी उपलब्ध हुई है, एक में तो वह लगभग नग्न हैं।

शोध पत्र भेजते समय कृपया निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें -

1) शोध-पत्र अधिकतम 4000 -5000 शब्दों तक में हों तथा 150 शब्दों का सारांश भी प्रेषित करें।
2) सन्दर्भ ग्रन्थ सूची का उल्लेख अवश्य करें। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में लेखक का उपनाम, मुख्य नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशन का वर्ष एवं पृष्ठ संख्या अंकित होना चाहिए। पत्रिका के सन्दर्भ में लेख का शीर्षक, पत्रिका का नाम, अंक, पृष्ठ क्रम एवं प्रकाशन वर्ष दें।
3) शोध-पत्र A -4 साइज़ के कागज पर कंप्यूटर से एक तरफ मुद्रित हो।
4) शोध-पत्र Microsoft Office Word में हिंदी में (Krutidev 10, Nirmala UI, Mangal) के Font Size 12.
5) शोध पत्र के प्रकाशन हेतु संपादक के नाम पत्र होना चाहिए, जिसमें स्पष्ट रूप से शोध पत्र के सम्बन्ध में " मौलिक एवं अप्रकाशित " शब्द लिखा होना चाहिए और इसे अन्यत्र न भेजे जाने की पुष्टि हो । इस सम्बन्ध में वेबसाइट पर उपलब्ध certification of originality डाउनलोड करें एवं उसे आलेख के साथ प्रेषित करें.
6) शोध पत्र में सारणी एवं चित्रों का प्रयोग लेख के बीच में न करते हुए अंत में सन्दर्भ या संलग्नक के रूप में करें।
7) शोध पत्र ई-मेल द्वारा निम्न ई-मेल पते पर अथवा वेबसाइट पर उपलब्ध प्रारूप के निम्न लिंक में भर कर भेजा जा सकता है:-

REFERENCES – (In English Only 11pt cambria 11, justify)

[1] Beechler, S., & Woodward, I. C. (2009). The global “war for talent”. Journal of international management, 15(3), 273-285. DOI: https://doi.org/10.1016/j.intman.2009.01.002.
[2] Collins, J. C., & Collins, J. (2001). Good to great: Why some companies make the leap... and others don't. Random House.
[3] Alm, J., & Torgler, B. (2006). Culture Differences and Tax Morale in the United States and in Europe. Journal of Economic Psychology, 27(2), 224-246.
[4] Chandrarin, G. (2017). Metode Riset Akuntansi Pendekatan Kuantitatif. Jakarta: Salemba Empat.

[5] C. S. Wang, “A new AC-coupled amplifier for portable ECG without reference electrode,” Comput. Electr. Eng., vol. 39, no. 1, pp. 141–149, 2013. DOI: https://doi.org/10.1016/j.compeleceng.2012.07.011.
[6] P. Konrad, “The abc of emg,” A Pract. Introd. to Kinesiol., no. April, pp. 1–60, 2005.

Please use reference example link for finding more examples how to cite different sources in APA style: https://apastyle.apa.org/style-grammar-guidelines/references/examples